ज्ञान तत्व 203

क एन्डरसन कितना अपराधी कितना प्रचार?
ख पत्रोत्तर रवीन्द्र सिंह पत्रकार गुना–गांधी इर्विन हेडगेवार व गोडसे।
ग मुनिमंथन पर प्रतिक्रिया–छवील सिंह सिसौदिया, गाजियाबाद, रामतीर्थ अग्रवाल, आचार्य पंकज ऋषिकेश ।
घ समीक्षा श्री अवधेश कुमार, जैन हिसार।
च समीक्षा मनोज दुबलिस, हापुड रोड, मेरठ,लोकतंत्र, आरक्षण, मीडिया, कर, हडताल।
छ समीक्षा अशोक अग्रवाल धमतरी ज्ञान तत्व की उपयोगिता।
ज प्रश्न मधुर कुलश्रेष्ठ जी गुना महिला आरक्षण।

(क) एन्डरसन कितना अपराधी कितना प्रचार?

एक बार मै प्रोफेसर दिनेश चतुर्वेदी के साथ सूरजपुर कार से जा रहा था। भारी वर्षा में एक व्यक्ति को कार लग गई और हमें लगा कि व्यक्ति मर गया । चतुर्वेदी जी गाडी रोक कर अस्पताल ले जाना चाहते थे और ड्राइवर विल्कुल नही चाहता था। मैने भी ड्राइवर का साथ दिया । चतुर्वेदी जी आज तक कहते है कि रूकना मानवीय था और मै अब भी कहता हूँ कि रूकना अव्यावहारिक था । सूरजपुर पंहुचकर हम लोगों ने पता किया तो पता चला कि मामूली चोट थी।

चतुर्वेदी जी की सोच मानवीय होते हुए भी अव्यावहारिक थी क्योकि नयी जगह पर आपके साथ और गाडी के साथ क्या दुर्व्यवहार होगा यह पता नही । यदि पता चले कि आप पैसे वाले है तब तो दुर्व्यवहार और भी ज्यादा होगा । पुलिस और पत्रकार क्या दुर्गति करेंगें यह पता नहीं । समाज का स्थान परजीवी या भीड़ तथा प्रांकृतिक न्याय का स्थान कानून लेले तब परिस्थिति अनुसार मानवता की परिभाषाएँ बदलना मजबूरी हो जाया करती है।

युनियन कार्बाइड कंपनी की टंकी से दुर्घटना वश गैस रिसाव के परिणाम स्वरूप पंद्रह हजार बेंगुनाह लोग मारे जाते है तथा लाखो यातनाये भुगत रहे है । कम्पनी के प्रंबंध संचालक उस समय अमेरिका मे थे। वे तत्काल भारत आते है। उक्त दुर्घटना के आरोप मे उनकी गिरफतारी होती है तथा जब पूरी स्थिति की समीक्षा होती है तब उन्हे गुप्त रूप से पुनः अमेरिका भेजने की व्यवस्था की जाती है । सरकार प्राकृतिक न्याय की जगह भावनात्मक न्याय का नाटक करती है । भावनात्मक न्याय पंद्रह हजार मौतों के लिये एन्डरसन सहित पूरी कंपनी को दंडित करने का पक्षधर है तो प्राकृतिक न्याय इसे दुर्घटना मानकर एंडरसन को औपचारिकता से अधिक अपराधी नहीं मानता । प्राकृतिक न्याय सिद्धान्त है कि जानबूझकर की गई हत्या, लापरवाही से होने वाली मृत्यु तथा विना गलती के होने वाली दुर्घटना के बीच फर्क होता है । जानबूझकर की गई हत्या गंभीर अपराध है, लापरवाही पूर्ण मृत्यु गलती है तथा दुर्घटना एक सामूहिक विपत्ति है। तीनो के दायित्व भी अलग अलग होते है और दण्ड भी । भोंपाल गैस घटना दुर्घटना थी या लापरवाही यह तो बाद मे पता चलेगा किन्तु यदि यह लापरवाही भी थी तो उसमे या तो कम्पनी की थी या कम्पनी के कुछ निचले कर्मचारियों की । उसके लिये एन्डरसन कम्पनी के प्रवंधक के रूप में दोंषी हो सकते है किन्तु व्यक्तिगत रूप से नही हो सकते जिसमे कम्पनी का कोई प्रत्यक्ष अपराध नही था। यदि कम्पनी की लापरवाही भी थी तो एन्डरसन का कहॉ कोई प्रत्यक्ष या परोक्ष

अपराध था? एन्डरसन पर किसी प्रकार का व्यक्तिगत अपराध का आरोप भारतीय कानूनों का दोष है या परजीवियों के भावनात्मक प्रचार का । वास्तव में तो एन्डरसन की व्यक्तिगत रूप से गिरफतारी ही प्राकृतिक न्याय का उल्लंधन हैं । किसी रेल दुर्घटना के लिये रेल मंत्री को इसलिये फांसी दे दी जाय कि उक्त दुर्घटना में हजारों व्यक्ति मारे गये, ऐसी मांग अस्वाभाविक तथा बेतुकी होती है। उक्त दुर्घटना में यदि किसी व्यक्ति की लापरवाही है तो आप उसे गिरफतार करें, सांकेतिक सजा भी दे दे किन्तु प्राकृतिक दुर्घटना के लिये उसे गंभीर दण्ड देना अन्याय भी है और अव्यावहारिक भी। मै एक्सीडेन्ट देखकर भी नही रूका यह मेरा अपराध था और पकडे जाने पर मुझे दण्डित भी होना चाहिये था किन्तु मेरे रूकते ही बिना अपराध मुझ पर विभिन्न धाराएँ लादना या भीड का आक्रमण मेरे साथ अमानवीय भी था अन्याय भी । यदि मुझे पता है कि रूकने और न रूकने का दण्ड और परिणाम अन्याय और अमानवीयता ही है तो बचने का प्रयत्न ही बुद्धिमानी है ।

एन्डरसन भारत आया। उसके जाने के बाद भी उसके साथ लगातार अपराधियों के समान व्यवहार किया गया। सभी सरकारें जानती थी कि वह दोषी नहीं है । कम्पनी मे एक्सीडेन्ट हुआ है जिसका समुचित मुआवजा कंपनी देगी।सरकार ने कम्पनी से पंद्रह सौ करोड रूपया मुआवजा ले भी लिया। मरने वालों की संख्या चार हजार से पंद्रह हजार तक की है । मुआवजे के बाद फिर से केश खोलकर उसकी सम्पत्ति जप्त कर ली जाती है जिसके लिये सुप्रीम कोर्ट एक अस्पताल का आदेश दे देता है। इन सबके बाद भी उसे मुक्त नही किया जाता क्योकि जिस तरह महिनों का भूखा आदमी ढूस ढूस कर खाता है उस तरह माना गया गया कि बडे भाग्य से एक विदेशी कम्पनी मे हादसा हुआ है । जितना निचोड सको उतना निचोड लो जिससे विदेशियों को पता चल सके कि हम चाहें तो उनके साथ किस सीमा तक जा सकतें है । मेरे विचार मे यह सब गलत हैं। हमे चाहिये था कि हम इसे राष्ट्रीय आपदा मानकर भोपाल गैस त्रासदी प्रभावितो की सहायता करते जिसमें कम्पनी का पंद्रह सौ करोड भी शामिल होंता । लेकिन हम सहायता और पुनर्वास की अपेक्षा व्यक्तिगत दण्ड दिलाने पर ज्यादा जोर देने लगे । हम इस सीमा तक नीचे उतर गये कि हम अपने ही न्यायाधीशों पर अनर्गल आरोप लगाने का कम्पीटीशन करने लगे। हमारे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम भी मैदान मे कूद पडे । यह नहीं सोच रहे कि इसी काल मे वे पांच वर्ष राष्ट्रपति रह चुके है । बाबा रामदेव सबको फासी देने की मांग कर रहे हैं। नेता और मीडिया कर्मी तो लगातार बोल ही रहे हैं। हर कोई सोच रहा है कि बोलने और लिखने मे वह पीछे न रह जाय। एक से बढकर एक जुमले तैयार हो रहे है । अब एन्डरसन के पुतले जलाने शुरू हुए हैं। अपने शहर के नामी गुण्डे के खिलाफ आवाज उठाने से भी डरने वाले अमेरिका मे बैठे एन्डरसन का पुतला जलाने की बहादुरी दिखा रहे है। न्यायाधीश अहमदी की हिम्मत ही नही है कि सच बोल सके । गोपीनाथ मुडे ने अर्जुन सिंह पर डेढ लाख रूपये चंदा लेने के बदले छोडने का धिनौना आरोप लगा दिया । सब जानते है कि अर्जुन सिंह जी चूहे खाने के आदी नहीं । आरोप लगाने वालों को उनकी गरिमा का ख्याल रखना चाहिये।

मैने गंभीरता से विचार किया कि सभी कांग्रेसी चुप क्यो है। नरेन्द्र मोदी ने ललकार कर सोनियॉ जी को मौत का सौदागर कहा और वे चुप है क्योकि सभी समझ रहे है कि कहीं न कहीं गल्ती हुई हैं । ये लोग समझ ही नही रहे कि उनका कानून गलत है, वे नहीं। मोदी जी पर जानबूझकर हजारो लोगों को मारने मे सहायता का आरोप है और राजीव गांधी पर एक दुर्घटना में गैर कानूनी तरीके से बचाने का आरोप है । यदि अमेरिका के कहने से भी छोडा गया तो क्या गजब हो गया ? क्या मोदी पर लगा आरोप और एन्डरसन का आरोप एक समान है? सोचने की जरूरत हैं।

मुख्य विषय यह है कि या तो सब चुप है या बोलकर अपनी भडास निकाल रहे है । लगे हाथ वीरप्पा मोइली ने तो यहा तक कह दिया कि वर्तमान कानूनों को और कडा किया जायगा । वीरप्पा जैसे नासमझ ने ही दहेज कानूनों को कठोर बनवाया था । दहेज के नाम पर जितना अन्याय हुआ वह दिख रहा है । अब संशोधन की आवाज उठ रही है कठोर मकान किराया कानून कितनी विसंगति पैदा कर रहा है यह सब जानते है। सब समझते हुए भी सुधार करने मे दिक्कते आ रही है। कानून सोच समझकर बनाने चाहिये। । कानून बनाने में दिमाग लगाना चाहिये दिल नहीं । यदि कानून बनाने मे दिल का प्रयोग हुआ तो विसंगति होनी ही है । विसंगति दूर करिये । अपराध,भूल और दुर्घटना को बिल्कुल अलग करिये । तीनों की गंभीरता अलग अलग करिये। सब धन बाइस पसेरी का मुहावरा ठीक नहीं । ऐसा मत करिये कि परजीवी लोगों की फौज खड़ी हो जावे।

यह भी विचारणीय है कि सभी राजनेता एक तरह का क्यों सोचते हैं । मेरे विचार में इसके पीछे उनका राजनैतिक स्वार्थ छिपा है । आठ आधारों पर वर्ग निर्माण वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष मजबूत करना इनकी मजबूरी है । गरीब अमीर के बीच वर्ग संघर्ष विस्तार के लिये यह करना ही पड़ता है । गरीबों को प्रत्यक्ष रूप से आंदोलित करते रहना और अमीरों को अप्रत्यक्ष रूप से सहायता देना इस वर्ग संघर्ष की रणनीति है । गरीब हमेशा अमीर के विरूद्ध संघर्षरत रहे और अमीर चुपचाप और अधिक अमीर होता रहे यह सभी राजनेताओं की रणनीति है। यदि कोई एकाध अमीर गल्ती से फंस जाय तो अधिकतम बेरहमी दिखाने से राजनेताओं की विश्वसनीयता बढ़ती है । एक यूनियन कार्बाइड को पूरी तरह नेस्तनाबूद कर देने से बाकी कम्पनियों को क्या नुकसान या भय होगा ? जब तक गरीब और अमीर के बीच की आर्थिक विषमता कम नहीं होगी तब तक ऐसे प्रयत्न नुकसान ही करने वाले हैं । राजनेताओं को सब पता है किन्तु उनकी नीयत ठीक नहीं है । क्योंकि यदि विषमता कम हुई तो वर्ग संघर्ष को नुकसान होगा और यह राजनेताओं के लिये घातक होगा । सम्पन्न लोग आज जिस बेरहमी से कमा रहे है उसमें कमी आवे तथा गरीबों को उसका लाभ मिले तब संघर्ष टलेगा । किसी दुर्घटना में अमीर आदमी का सब कुछ छीन लेने से कभी हल नहीं होगा । नेता लोग इसे समझें । और न समझें तो हम समझा दें ।

परजीवी तो हमेशा मक्खी के समान घाव खोजते ही रहते हैं । ऐसी दुर्घटनाओं से लम्बे समय तक लाभ उठाते रहना उनका व्यवसाय है । सुभाष चन्द बोस कब के मर गये । आज तक उस मामले को जिन्दा रखने से कुछ लोगों की तो रोजी रोटी चलती ही होगी । ऐसे हजारों मामले चल रहे हैं जो अनावश्यक विस्तार पा रहें है । भोपाल गैस दुर्घटना का मामला तो बहुत बड़ा मामला है । पीड़ितों का स्वाभाविक पक्षकार बनकर अपना न्यूशेन्स वैल्यू बढ़ाते जाना भी एक कला है । मानवाधिकार और पर्यावरण संरक्षण के नाम पर तो परजीवियों की अच्छी खासी फौज खड़ी ही दिखती है किन्तु मीडिया भी आजकल इस दिशा में अधिक ही सक्रिय है । एक बड़े अखबार समूह ने तो बाकायदा इसके लिये अभियान ही चला दिया था । अभियान चलाना उनका अधिकार है किन्तु सत्य छिपाकर अभियान चलाना उचित नहीं । एन्डरसन घटना के समय अमेरिका में था । वह किसी के आश्वासन पर भारत आया और आश्वासन के आधार पर गया । इसमें आश्वासन दाता कहॉ दोषी है । भारत सरकार ने बीस वर्ष पूर्व ही कम्पनी से समझौता करके पंद्रह सौ करोड़ रूपये ले लिये और गैस पीड़ितों को बांट दिये । प्रत्येक मृतक को तीन लाख रूपया दिया गया । ये तीन बाते छिपायी क्यों जा रही हैं । मुआवजा पचीस हजार बता कर मीडिया भावनात्मक उबाल पैदा कर रहा है । भाजपा अवसर का लाभ उठा रही है और कांग्रेस बिना गल्ती के अपराधी के समान चुप है क्योंकि वह सच बोलकर अपना भविष्य नहीं बिगाड़ना चाहती । उसे भी तो भविष्य में टमाटर और प्याज जैसे मुद्दे उछालने पड़ सकते हैं । कई लोग तो दूसरे पक्ष के साथ मिलते भी

रहते हैं । समाज में सब तरह के लोग हैं। कुछ वास्तव में दया भाव से काम करते हैं तो कुछ व्यावसायिक रूप से। व्यावसायिक रूप बालों की संख्या अवश्य ही ज्यादा है ।

कानून को साफ करना चाहिये कि किसी भी दुर्घटना में पीड़ित पक्ष की सहायता करना समाज का कर्तव्य है पीड़ित का अधिकार नहीं । यदि किसी के साथ अपराध हो तो पीड़ित का अधिकार बनता है किन्तु दुर्घटना में सहायता समाज के कर्तव्य तक सीमित है । इस प्राकृतिक सिद्धांत का पालन करना चाहिये । हमारे कानून कितने उल्टे पुल्टे है कि किसी डाकू द्वारा निर्दोष की हत्या करने का मुआवजा पीडित का अधिकार नही । किन्तु आग लगने या सॉप काटने पर मुआवजा उसका अधिकार है। मोइली जी को संशोधन करना चाहिये । इधर उनका ध्यान नहीं है । भोपाल गैस दुघर्टना पीड़ितों को अब अधिक से अधिक मानवीय सहायता चाहिये । यह हमारा कर्तव्य है । हम यह काम न करके एन्डरसन को फांसी दो के नारे उछाल रहे हैं । यह पीड़ितों की आवश्यकता में शामिल नहीं । हजारों मृतकों की चिता से रोटी सेकने के प्रयत्न ठीक नहीं । समाधान सोचिये । पीड़ितों को राहत की व्यवस्था करिये । उनके दर्द को जगाने से कुछ नहीं होगा ।

मैं जानता हूॅ कि इस दिशा में सोचने वाला मैं अकेला दिखता हूॅ । बिल्कुल अकेला । फिर भी मैने अपने विचार हिम्मत करके लिखे हैं जिससे इस मुद्दे पर समाज में एक बहस छिड़ सके । यदि ऐसा हुआ तो मैं लेख को उपयोगी समझूंगा ।

पत्रोत्तर

(ख) श्री रवीन्द्र सिंह पत्रकार गुना

प्रतिक्रिया – ज्ञानतत्व अंक एक सौ निन्यान्नवे मिला । साम्प्रदायिक तत्व गांधी हत्या के बाद लम्बे समय तक शुतुरमुर्ग बने रहे । धीरे धीरे इन्होंने पंख फैलाये । गांधी इर्विन समझौते से हेडगेवार कभी संतुष्ट नहीं रहे । चुप रहना उनकी विवशता थी क्योंकि साम्यवादी सहित अन्य सब लोग कांग्रेस के साथ थे । हेडगेवार ने आर्य समाज को अपनी ढाल बनाया और इस ढाल की ही उपज गोडसे था ।

उत्तर – गांधी इर्विन समझौता मेरे जन्म पूर्व इतिहास का विषय है जिसका मेरे लेख से संबंध नहीं है । गोडसे आर्य समाज की देन था यह मैने पहली बार आपसे सुना है। आर्य समाज के कुछ लोग गांधी जी के आंदोलन के साथ थे और कुछ लोग क्रान्तिकारियों के साथ । संघ की प्राथमिकता स्वतंत्रता नहीं थी किन्तु आर्य समाज की थी। गोडसे न गांधीवादियों के साथ था न क्रान्तिकारियों के साथ । उसके विचार या तो हिन्दू महासभा से मेल खाते थे या संघ परिवार के साथ । आपने जबरदस्ती आर्य समाज को लाकर घुसा दिया । एक विचार है कि यदि किसी अपराधी व्यक्ति के भी विरूद्ध प्रचार करने में ऐसे असत्य का सहारा लिया जाय जो प्रथम दृष्टि में ही असत्य हो तो अपराधी की प्रतिष्ठा बढ़ती है । आज संघ परिवार जिसे लगातार साम्प्रदायिक कहने का ठेका कुछ लोगो ने उठा रखा है , उनके झूठे प्रचार के कारण ही संघ परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ रही है । यदि ये ठेकेदार कुछ दिनों के लिये सत्य का सहारा लेना शुरू कर दें तो जल्दी ही संघ परिवार का यथार्थ समाज के समक्ष प्रकट हो जायेगा । आपने संघ परिवार के साथ साथ आर्य समाज को भी लपेट लिया है इसका कोई पुष्ट प्रमाण भेज सकें तो अच्छा होगा ।

(ग) श्री छवील सिंह जी सिसोदिया गाजियावाद यूपी

प्रतिक्रिया – ज्ञानतत्व दो सौ एक में आनन्द गुप्त जी ने मुनि जी के विचारो को संकलित करके बहुत अच्छा काम किया है । मुझे तो यह अंक बहुत ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगा । अनेक जानकारियां एक जगह इकट्ठी हो गई। इस अंक की कुछ प्रतियां अलग से छपें तो अच्छा होगा । सौ दो सौ तो मुझे चाहिये ।

श्री डा0 रामतीर्थ अग्रवाल दिल्ली

अंक दो सौ एक बहुत उपयोगी है किन्तु प्रत्येक विषय को इतने संक्षिप्त मे लिखा गया है कि जब तक एक विषय समझने की स्थिति बनती है तब तक नया विषय आ जाता है । इस पुस्तक को अधिक विस्तृत होना चाहिये । डा. राजकुमार मिश्र अम्बिकापुर वाले ने मेरे साथ जो अन्याय किया उसमें आपने मेरी सहायता नही की इसका मुझे दुख है।

श्री आचार्य पंकज राष्ट्रीय अध्यक्ष व्यवस्था मंच ,ऋषिकेश,उत्तरांचल

समीक्षा –आंनंद गुप्त ने मुनि मंथन पुस्तक लिखकर सराहनीय कार्य किया है । इस आधार पर संपूर्ण विश्व में एक बहस छिड़नी चाहिये जिससे समाज सत्य और असत्य को आसानी से अलग–अलग कर सके।

उत्तर– मै भी समझता हूॅ कि मेरे बिखरे विचारो को बहुत संक्षिप्त तथा सुलझी हुई सरल भाषा मे लिखकर आनन्द जी ने एक सराहनीय पहल की है । यदि विचारो को कला और साहित्य का सहारा मिल जावे तो विचार सार्थक हो जाते है अन्यथा किसी कोने मे या तो पड़े पड़े ऑसू बहाते रहते है अथवा अवसर की प्रतीक्षा करते रहते है । आनन्द जी एक अच्छे कलाकार है। उन्होने विचारों के महत्व को समझा यह बहुत बडी बात है। ईश्वर उन्हे सफल करें।

आनन्द जी ने इस पुस्तक की अलग से पॉच हजार प्रतिया छपवाई है । वे उपयुक्त तरीके से वितरित भी करेगें।

डा, राजकुमार मिश्र का रामतीर्थ जी से विवाद है इस संबंध मे उनकी अपेक्षा स्वाभाविक है । मै रामानुजगंज क्षेत्र से बाहर के द्विपक्षीय विवादों से सतर्क रहता हूॅ। रामतीर्थ जी सरीखे उच्च कोटि के विद्धान तथा समाज सेवी की सहायता न कर पाने का मुझे दुख है किन्तु मेरी भी मजबूरी है । डाक्टर साहब मेरी मजबूरी समझेंगे ।

(घ) . श्री अवधेश कुमार, जैन श्वेतांबर भवन, हांसी, हिसार, हरियाणा

समीक्षा– आपके अनमोल ज्ञान तत्व खजाना, क्रांतिकारी ,सुधारवादी ,ज्ञानवर्द्धक ,वौद्धिक शक्ति मजबूत बनाने वाला बेखौफ ,बेबाक टिप्पणी वाला चेंतना जागरण करने वाला ज्ञान तत्व मुझे नियंमित प्राप्त हो रहा है । पता परिवर्तन होने के बावजूद 16से 30 वाली अंक मे महिला पुरूष संबंध और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर समाजोत्थानात्मक टिप्पणी की है । इसे लाखो नही करोडों लोग पढे तो भारतीयों का मानसिक व वौद्धिक स्तर सम्मुनत होगा । ज्ञान तत्व न केवल हम अकेले पढते है बल्कि मुनि श्री कुलदीप कुमार साखिया अहिसा प्रशिक्षण केन्द्र के संभागी डा. विजय रामभंज शर्मा , विजेन्द्र जैन प्रदीप जैन सहित अनेक लोग पढते हैं। हम यहॉ वाचनालय चलाते है जिसमें ज्ञानतत्व की प्रतिया पाठक लोग बहुत चाव से पढते है। मुनि श्री कुलदीप जी ने फरमाया है कि काग्रेस

और भाजपा के कार्यालय मे ज्ञानतत्व पढाया जाय तो बहुत अच्छा । मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि विजनौर की तरह हॉसी मे भी कथा हो । भारतीय नेताओ के बारे मे टिप्पणी सार्थक है। सितम्वर 2001 मे अम्बिकापुर मे 50 शिक्षको को योग प्रशिक्षण दिया था। मेरा पता बदल गया है । आप नये नाम और पता पर भेजने की व्यवस्था करे। आप इतना बढिया जन उपयोगी पत्रिका निकाल कर समाज के क्रीम (अच्छे) लोगो के पास पहुचाने की निष्पक्ष निःस्वार्थ व्यवस्था कर रहे है यह सिर्फ भारत के लिये ही नही सम्पूर्ण विश्व के लिये गौरव की बात है। ज्ञान यज्ञ की इस गौरवशाली परम्परा मे हम सब आपके साथ है।

श्री रिषभ जागरूक, मणिमहल, जयपुर, राजस्थान –आपका ज्ञानतत्व निरंन्तर मिल रहा है पढता हूँ, ज्ञानवृद्धि होती है । कुछ माह से आप से पूछे जाने वाले प्रश्नो के उत्तर अधिक सारगर्भित बेबाक और सटीक दिखाई दिये । नाथूराम गोडसे से गांधी हत्या के सम्बंध मे आपके विचार क्रांतिकारी लगे । अनेक राजनीतिज्ञ स्वयं सेवी गांधीवादियों से हटकर । आपने अपने पूर्व पत्र मे व्यवस्था परिवर्तन के प्रति रूचि रखने वाले बुद्धिजीवियों एवं सजग पाठको के नाम चाहे थे वे भेज दिये गये । प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ ज्ञात नही हुआ उन्हे ज्ञान तत्व प्रेषित हुआ या नही । ज्ञात कराया गया है कि आप ज्ञान तत्व की ग्राहक संख्या दुगनी करना चाह रहे है।

उत्तर– ज्ञान तत्व के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में समाज सशक्तिकरण का जो प्रयास हो रहा है उसमें मेरा कुछ भी न होकर सब कुछ आप जैसे महापुरूषों का ही है । विशेष कर मेरे वानप्रस्थ के बाद तो मेरा सारा खर्च समाज ही उठा रहा है । ऐसी स्थिति में प्रशंसा लेने का मेरा कोई अधिकार नहीं बनता । फिर भी आप लोगों की टिप्पणियॉ उत्साह तो पैदा करती ही है । मेरा पूरा प्रयत्न रहेगा कि विचार यज्ञ लगातार बढ़ता रहे जिससे आसुरी प्रवृत्तियों को सफल चुनौती दी जा सके ।

दिसम्बर पचीस से एक जनवरी तक के रामानुजगंज संगम में आगे की योजनाऍ भी बनेंगी । आप लोग उस समय आइये । बैठकर कार्यक्रम तय होगा ।

गोडसे और गांधी संबंधी मेरे लेख पर व्यापक बहस छिड़ने से मुझे संतोष हुआ है । नये नामो को ज्ञानतत्व जाना शुरू हो गया है । और नाम भेजियेगा।

च. श्री मनोज दुबलिस, हापुड रोड, मेरठ – 250002

आज भारत का जनमानस यह समझ चुका है कि भारत अपनी खोई प्रतिष्ठा आसानी से प्राप्त नहीं कर सकता। यहा का लोकतंत्र झुठ पर टिका है । यह देश पहले बौद्धो, तानाशाह राजाओं, मुगलों व अंग्रेजो का गुलाम रहा । अब चंद गुण्डों का गुलाम है । लोग शिवाजी, गुरूगोविंद जी, सुभाष, चंद्रशेखर , भगत को भूल गए एवं अंग्रेजों के पिट्ठू मोहनदास को राष्ट्रपिता कहने लगे । किस लोकतंत्र की बात करे जिस व्यक्ति का सारा समय दो वक्त की रोटी हेतु बीतता हो वह कैसा वोटिंग का उपयोग करेगा ? जाहिर है ऐसे वोट पैसे से बिकेंगे । इन्हीं वोटों के बहुमत से बनी सरकार के राज को लोकतांत्रिक कहना गलत होगा । ऐसी वोटिंग में आधी से अधिक आबादी वोट नहीं देती इसलिए यह Election न होकर Selection है । चंद बेइमानों से आपको एक बेइमान चुनना है । नेता जानते है जबतक ये भूखे नंगे है तभी तक बिक रहे है। समझदार होकर वोट नहीं देंगे। आजतक इसीलिए BPL कार्डधारी प्रोन्नत नहीं हुए।

जातिगत आरक्षण द्वारा प्रतिभा का दमन शुरू हुआ। जहां शादी पूर्व संबंध को न्यायिक कहा जाए वहा लोकतंत्र कैसे रहेगा ? आरक्षण द्वारा नौकरियों में 50ः दलित व पिछड़ों को आरक्षण है। जनसंख्या में 40ः मुसलमान अर्थात भविष्य में ये दोनो ही सभी नौकरियों व राजनीति में आरक्षित होंगे ?और सामान्य जन का अस्तित्व न के बराबर। इन लोगो ने बहुत तेजी से आरक्षण लाभ हेतु जनसंख्या विस्तार किया है । यहॉ के बच्चे विदेश में पिटने लगे। वे कहा जाए यहॉ आरक्षण से परेशान वहॉ पिटाई से । ऐसे ये भारत का विकास कैसे होगा । यदि गरीब कमजोर की मदद करनी हो तो शिक्षा, पैसा व अन्य मदद करे। किंतु वह उनका अधिकार न बना दे । आरक्षण के कारण ही उच्च शिक्षा का निजीकरण व व्यवसायिकरण होता जा रहा है । ऐसे व्यवसायिक भ्रष्टाचार का उदाहरण है डा0 केतन देसाई ।

कहने को तो media लोकतंत्र का स्तंभ है पर यह कितना ईमानदार है सभी जानते है । यहॉ का लोकतंत्र पूर्णतः पाखण्ड है जहॉ नेता , अभिनेता, मीडिया, संत गुरू सभी गरीबों असहायों का मजाक उडाते हैं । ये प्रतिष्ठित लोग ही नारी दुर्दशा हेतु भी जिम्मेदार है । यहा का कानून भी बिकाउ है जहां शराब विक्रय को राजस्व प्राप्ति का स्रोत माना जाता है ।

आज भारत में लगभग हर संभावित तरीके के कर लगाया जा रहा है जिसका अधिकांस हिस्सा नेताओं के उपर ही खर्च होता है । नक्सली व आतंकी हमलो में नेतागण क्यों नहीं मरते । उत्तर प्रदेश में गंदगी से बुरा हाल है ऐसी शासन व्यवस्था है । मास्टर को पढ़ाई छोड़कर बाकी सारे काम की ड्युटी लग जाती है ।

एक तो पहले ही सरकारी कर्मचारी काम नहीं करता, गांधी द्वारा सिखाए हड़ताल ने उनकी पौ बारह कर दी है परेशान आम आदमी होता है । कई वर्षो की तनख्वाह नौकरी पाने के लिए रिश्वत देने के लिए तैयार है ताकि बाद में युनियनबाजी, हड़ताल व घुसखोरी कर सके । यदि यह भी कहें कि प्प् का पोषण नेता व कर्मचारी मिलकर कर रहे हैं तो भी अतिशंयोक्ति नहीं होगी ।

अर्थात हम पहले भी गुलाम थे व आज भी गुलाम है । मेरा मुनि जी से निवेदन है कि वे इस संबंध में अपनी टिप्पणी दे कि वे कितना सहमत है ?

उत्तर–आपने समस्याए बताई और कुछ समस्याओ के कारण बताये किन्तु समाधान पर कोई चर्चा नही की । आप समाधान पर चर्चा शुरू करें तो अच्छा होगा । भारत को स्वतंत्रता दिलाने में गांधीवादियों की भूमिका महत्वपूर्ण थी या क्रातिकारियों की यह चर्चा इतिहास का विषय है । शादी पूर्व सम्बंधो को नियत्रित करने का अधिकार परिवार गांव और समाज का हो या सरकार का इस पर भी पृथक चर्चा हो सकती हैं। आरक्षण भी विवादस्पंद विषय है। टैक्स भी समाज को गुलाम बनाने का आधार बना हुआ हैं। आप समाधान पर कुछ लिखिये तो चर्चा बढ़ सकती हैं।

श्री कैलाश आदमी, सम्पादक निर्दलीय भोपाल मध्यप्रदेश

समीक्षा– मैं हमेशा ही व्यवस्था परिवर्तन का पक्षधर रहा हूॅ । मैने आपके साथ मिलकर काम भी किया है । कई मुद्दों पर असहमति भी रही है । आपने जबलपुर पुलिस कन्ट्रोल रूम में आयोजित सभा में एक ऐसा ही उटपटांग विचार व्यक्त किया कि तानाशाही से अव्यवस्था रूक जाती है । आप आपातकाल मे तानाशाही के विरूद्ध अठारह

माह तक जेल में रहे और आज आप तानााशाही का समर्थन करने लगे। आपकी यह दुसरी मानसिकता घातक है। मैं चाहता हूॅ कि आप तथा अरून्धती राय जैसे लोगो की सिरफिरी बातों का विरोध होना चाहिये।

उत्तर–मैने जबलपुर में नक्सलवाद विषय पर व्याख्यान दिया था जिसका आशय यह था कि ''लोकतंत्र जिन देशों मे भी जीवन पद्धति में न आकर शासन पद्धति तक सीमित रह जाता हैं वहॉ अव्यवस्था निश्चित है और अव्यवस्था को दूर करने का सफल मार्ग होता है तानाशाही । अव्यवस्था समाज मे तानाशाही की भूख पैदा करती हैं। तानाशाही समाज व्यवस्था का सबसे घृणित स्वरूप है क्योकि तानाशाही पूरी तरह गुलामी है किन्तु अव्यवस्था होने पर आप तानाशाही से बच नही सकते । तानाशाही से बचने का एक ही मार्ग है ग्रांम सभा सशक्तिकरण। ग्राम सभा सशक्तिकरण के माध्यम से लोकतंत्र को लोक स्वराज्य मे बदला जा सकता है जिससे अव्यवस्था घटे तथा तानाशाही का खतरा टले।''

मैने जीवन भर तानाशाही का विरोध किया है और अब भी कर रहा हूॅ किन्तु मैं तानाशाही के डर से वर्तमान लोकतंत्र की आलोचना भी नही छोड सकता क्योकि मेरे विचार में वर्तमान दूषित लोकतंत्र तानाशाही को आमंत्रण देता है। मै अरून्धती राय के वयान के विल्कुल विरूद्ध हूॅ क्योकि मेरे विचार में गांधीवाद असफल नही हुआ है बल्कि आज के वातावरण में गांधीवाद ही सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। यह अलग बात है कि वह गांधीवाद बंग जी आदि के मार्ग दर्शन वाला हो अथवा राही जी आदि की टीम के मार्ग दर्शन वाला। स्पष्ट है कि मैने राही जी की टीम वाले गांधीवाद का सदा विरोध किया है और बंग जी सिद्धराज जी आदि द्वारा परिभाषित गांधीवाद का समर्थन। मेरे और आपके बीच कभी विचार मंथन पर मतभेद नहीं रहा, निष्कर्षो पर मतभेद स्वाभाविक है जो कोई बुरी बात नहीं। सिरफिरी बातों का विरोध होने के पूर्व मंथन हो तो और अच्छा होगा क्योंकि अरून्धती राय के विचारों के जिस तरह आप विरूद्ध है उसी तरह मैं भी हूॅ। साथ ही वर्तमान अन्याय पूर्ण राजनैतिक व्यवस्था के विरोध के भी हम दोनो पक्षधर हैं। हम दोनों का ही उद्देश्य नहीं कि वर्तमान राजनैतिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर हिंसा कासमर्थन करें जैसा अरून्धती जी ने किया। इसलिये निष्कर्षो पर काम जारी रहे और मत भेदों पर मंथन चलता रहे यही उचित मार्ग है।

छ श्री अशोक अग्रवाल कुरूद, धमतरी, छत्तीसगढ

समीक्षा–आपका पत्र 26/5/10 को प्राप्त हुआ । मैने आपको प्रणाम लिखा है। वह विल्कूल यर्थाथ है किसी चाटूकारिता के प्रेरणा लेकर नही ।क्योकि आपके ज्ञानतत्व ने मुझे एक दल विशेष की मानसिक दासता से मुक्त कराया है । इसका आपको कोटिश साधुवाद। आपके विचार पहले तो अटपटे असंभव और काल्पनिक से ही लगते थे किन्तु उसे जो चिंतन और मनन किया ये असत्य सत्य और मौलिक प्रतीत होते गये। दरअसल मेरी स्थिति उस एकलव्य के जैसी है जो प्रतिदिन अपने गुरू का ध्यान करते हुये शस्त्राम्यास करता है किन्तु उसके समीप नही जा सकता । फिर भी आपके ज्ञान तत्व मुझे जीवन मे प्रेरणा देते रहते है। आपका स्थान मेरे जीवन मे सच्चे पथ प्रदर्शक गुरूदेव के समान ही है। किसी की प्रशंसा के मामले मे मै थोडा कंजूस हूॅ । आपकी पत्रिका ने मेरे विचारो मे ही नही व्यक्तित्व मे भी परिवर्तन लाया है और इसकी चर्चा मेरे मित्र और पूर्व दलीय कार्यकर्ता आपस मे करते रहते है। उन्हे मेरे सन्यासी वन जाने की आशंका सता रही है।

उत्तर – मेरे परिवार को भी बचपन से ही मेरे सन्यासी बन जाने की आशंका सता रही थी । मै सन्यासी नहीं बना और गृहस्थाश्रम ठीक से निभाकर अब वानप्रस्थ लिया है। वानप्रस्थ भी मानसिक ज्यादा है सामाजिक कम।

मै सोचता हूॅ कियदि मै बचपन मे ही सन्यास ले लेता तो अच्छा होता या बुरा । निर्णय करना कठिन है किन्तु मै बचपन मे ही सन्यास न लेने से संतुष्ट हूॅ । यदि मै पूर्व में ही सन्यास लेलेता तो मुझे श्रम ,राजनीति या अर्थशास्त्र का जितना अनुभव हुआ उतना नही हो पाता । अब तो मै सामाजिक ,आर्थिक संवैधानिक ,राजनैतिक विषयो पर आधिकारिक रूप से विश्व स्तरीय टिप्पणी कर पाता हूॅ। मै कह सकता हूॅ कि मैं शिक्षा के आधार पर तथ्य प्रस्तुत न करके ज्ञान के आधार पर प्रस्तुत कर रहा हूॅ। यही कारण है कि मेरी कही बहुत सी बाते विश्वस्तरीय परिभाषाओ को चुनौती देने के कारण अटपटी लगती हैं। कई बार सामने वाला समझ जाता है तो कई बार मैं सशोधन कर लेता हूॅ । मै यह कभी नही कहता कि मै जो कह रहा हूॅ वह अन्तिम सत्य है । किन्तु मै यह नही मानता कि जो कुछ पूर्व मे लिखा है वह अन्तिम सत्य है। इसलिये विचार प्रचार के पूर्व गंभीर मंथन चाहियें। मंथन के बाद निष्कर्ष और उसके बाद प्रचार का नम्बर आता है। आपको मेरी जो बात ठीक लगे उसे आप दूसरो को बता सकते है । किन्तु मेरी हर बात ठीक है ऐसा मानकर विना विचारे दुसरो को बताना खतरनाक परंपरा हैं।

आप हमारे अभियान की सहायता करना चाहते है। मुझे नही पता कि आपकी क्षमता क्या है ? आप चाहे तो ज्ञान तत्व के लिये कुछ नाम भेज सकते है । वे चाहे शुल्क दे या न दे । वैसे शुल्क भी एक सौ रूपये वार्षिक या पॉच सौ रूपया आजीवन कोई अधिक नही हैं। आप पचीस दिसम्बर से एक जनवरी तक के रामानुजगंज सम्मेलन में शामिल हो सकते हैं। कोई अधिक सहायता कर सके तो एक हजार रूपया वार्षिक की कर सकता है। हमारा पता बनारस चौक अम्बिकापुर सरगुजा छ.ग. का ही है।

(ज)श्री मधुर कुलश्रेष्ठ जी गुना ,मध्यप्रदेश

ज्ञान तत्व नियमित रूप से मिल रहा है । मेरा यह पहला पत्र हैं। काफी दिनो से पत्र लिखने की सोच रहा था परन्तु समयाभाव के कारण नही लिख पाया ।

ज्ञान तत्व के विचारोत्तेजक लेख मुझे व मेरी पत्नी को काफी प्रभावित करते है।

आरक्षण का मतलब ही अपने आप मे विषमता और वैमनस्य बढाने वाला है । आरक्षण की वैशाखियों द्वारा अयोग्य को योग्य से आगे बढ़ाकर समाज मे योग्य के अंदर आक्रोश एवं अवसाद पैदा करता है। चाहे वह कोई सा आरक्षण हो ।ैज्ैब आरक्षण ने उॅच व नीच के बीच ही नही बल्कि हरिजनो के अंदर भी वर्ग भेद पैदा किया है । महिला आरक्षण की चिल्लपो से भी कुछ हासिल नहीं होना है। पंचायतो मे महिला आरक्षण लागू है । उससे कितनी महिलाऍ अपने दम पर सरपंच बनी है । लगभग सारी महिला सरपंच अपने पति या पुत्र के रिमोट कंट्रोल पर लम्बा सा घूंघटकर निर्धारित स्थान पर अगूंठा लगाती रहती है। कई कई जगह तो यह शुभ कार्य भी सरपंच पति या सरपंच पुत्र द्वारा ठके या अन्य अधिकारियों के समक्ष कर दिया जाता है ।

संसद या विधान सभाओ मे महिला आरक्षण लागू हो जाने से सांसद /विधायक पति या सांसद/विधायक पुत्र के पद स्वतः बढ जाऍगे और वे भी सरकारी मेहमान बनकर महिला आरक्षण की धज्जियॉ उडायेगे।

उत्तर – राजनीति का स्वाभाविक चरित्र होता है कि वह दस प्रकार के प्रयत्न करे

(1) समाज मे वर्ग निर्माण करके वर्ग विद्वेष को वर्ग संघर्ष की दिशा देना।

(2) समाज को नीचे गिराकर राष्ट्रभाव को उपर करना

(3) समस्याओं का इस तरह समाधान करना कि उस समाधान से ही कोई बडी समस्या पैदा हो।

(4) सामाजिक समस्याओं का प्रशासनिक, प्रशासनिक का राजनैतिक , राजनैतिक का सामाजिक समाधान खोजना और करना।

(5)वैचारिक विचार मंथन को निरूत्साहित करते हुए भावनात्मक मुद्दे आगे करना।

(6)गरीब लोगों के अधिक उपयोग की वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर लगाना तथा प्रत्यक्ष सहायता देना । अमीर लोगों के व्यापक उपयोग की वस्तुओं पर प्रत्यक्ष कर लगाना तथा अप्रत्यक्ष सहायता देना ।

(7)बिल्लियों के बीच बंदर की भूमिका में स्वयं पंच बने रहना।

(8)इतने अधिक कानून बनाना कि प्रत्येक व्यक्ति अपराध बोध में रहे

(9)अपराध ,गैर कानूनी और अनैतिक को मिलाकर अपराध घोषित करना।

(10)कभी अपराधों की रोकथाम नहीं करना किन्तु रोकथाम करते हुए दिखना । हमारी वर्तमान सभी सरकारें दसों काम लगातार करती रहती हैं । आरक्षण उनमें से एक है। आरक्षण समाज को तोड़ने का माध्यम है।

उपरोक्त दस प्रयत्नों को आप तब तक नहीं रोक सकते जब तक आप राज्य को अपने संरक्षक की जगह मैनेजर न बना दें। काम कठिन है किन्तु ठीक दिशा में प्रयत्न जारी हैं। रामानुजगंज विकास खंड ने शुरूआत की है। सफलता दिख रही है ।